राजीव भाई दीक्षित

नमो गोव्य:

पंचगव्य विद्यापीठम्

महर्षि वाग्भट्ट

पंचगव्य एक सम्पूर्ण चिकित्सा, पुनर्स्थापक, वर्ष 2013

पंचगव्य गुरुकुलम् (कांचीपुरम) समूह स्थापना वर्ष 1999

(भारतीय पौराणिक तकनीकी ज्ञान को समर्पित गुरुकुलीय विश्वविद्यालय)

हमारा लक्ष्य

गऊमाता के गव्यों से समृद्ध और शक्तिशाली भारतराष्ट्र

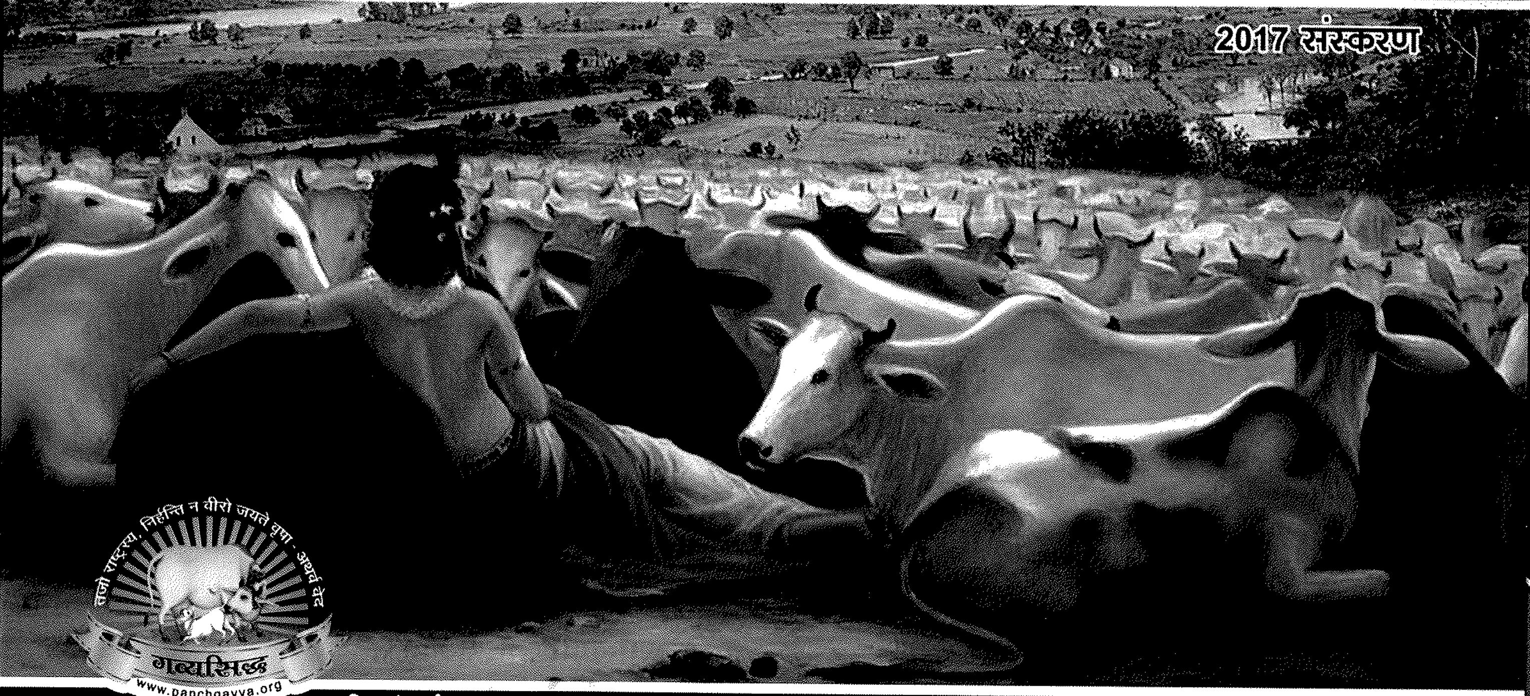

ध्वनि संपर्क सहायता : 8 9500 95000, ग्राम : कट्ठावाक्कम, पोस्ट : तेनेरी, जिला : कांचीपुरम- 631 605

गऊ सेवा	डॉक्टर एसोसियेशन	विद्यापीठम्	पंचगव्य ऑनलाईन
www.panchgavya.org	www.gavyasiddh.org	www.panchvidya.org	www.gavyahaat.org
gomaata@gmail.com	siddhgavya@gmail.com	vidyapanch@gmail.com	haatgavya@gmail.com

पंचगव्य विद्यापीठम् प्रथम 'पंचगव्य चिकित्सा शिक्षा' स्थापना केन्द्र

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा - कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

भारतीय न्यास अधिनियम 1992 के अंतर्गत पंजीकृत

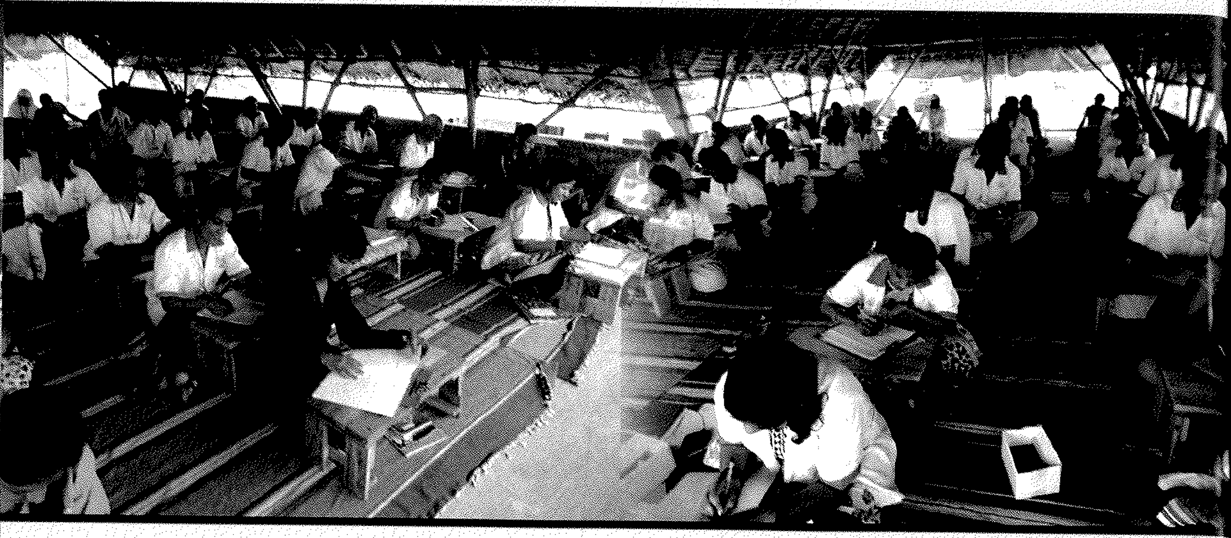

पंचगव्य विद्यापीटम्
सभी भारतीय
भाषाओं में
पंचगव्य चिकित्सा
विज्ञान को स्थापित
करने हेतु
कृतसंकल्पित है।

गव्यसिद्धचारी
डॉ शांता देवी
एम. डी. (पंचगव्य)
वर्मा एवं मर्म थेरेपी की
पारंपरिक वैद्य

इसका विस्तार भारत के सभी प्रदेशों में है। जहाँ पर पंचगव्य गुरुकुलम् द्वारा तैयार किये गए सरल चिकित्सा के पाठ्यक्रमों को भारत के प्रदेशों में वहां की स्थानीय भाषाओं में पढ़ाने की व्यवस्था कराई गई है। इस संस्थान में तैयार व्यक्ति गव्यसिद्ध व गव्यसिद्ध डॉक्टर कहलाते हैं। इसके अंतर्गत संचालित सभी पाठ्यक्रम सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं।

प्रतिवर्ष लगभग 500 गव्यसिद्ध व गव्यसिद्ध डॉक्टर तैयार किये जा रहे हैं, जो भारत के 23 राज्यों में पंचगव्य चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। गौशालाएं स्वावलंबी हो रही हैं। असाध्य कहे जाने वाली बीमारियां पंचगव्य से साध्य हो रही है।

''गऊमाँ से असाध्य नहीं कोई रोग''

विस्तार केन्द्र संपर्क

पंचगव्य विद्यापिठम (विस्तार)
मु.पो. सोलगांव, ता. राजापूर,
जि. रत्नागिरी ४१६७०२
मो. नं ८६९८८९८८१९

नामांकण एवं मार्गदर्शन ?

1 ऑनलाईन नामांकण लिया जा सकता है।

www.panchvidya.org

1 ऑनलाईन नामांकण पेज पर जाएं।

2 वहां दिये गए प्रपत्र को भरें।

3 रु 5000 पंजिकरण शुल्क जमा करें।

1 पेमेंट गेटवे से जमा किया जा सकता है।

2 पंचगव्य विद्यापीठम के चालू खाता में भरा जा सकता है।

3 पंचगव्य विद्यापीठम के नाम से डिमांड ड्राफ्ट भेजा जा सकता है।

4 शेष शुल्क बैंक में ही जमा करना है, शुल्क नकद नहीं लिए जाते हैं।

2 प्रदेश और भाषा के आधार पर विस्तार केन्द्र का चुनाव कर सकते हैं, अथवा मुख्य केन्द्र कांचीपुरम में भी नामांकण ले सकते हैं।

3 सभी विस्तार केन्द्रों पर 50 प्रतिशत कक्षाएं होती हैं। 10 प्रतिशत महासम्मेलन में, शेष के 40 प्रतिशत के लिए मुख्य केन्द्र कांचीपुरम आना पड़ता है। परीक्षा मुख्य केन्द्र पर ही होती है।

चार चरणों में शिक्षा की व्यवस्था होती है।

1 विस्तार केन्द्र संचालक द्वारा ली जाने वाली कक्षाएं - विस्तार केन्द्र पर।

2 आचार्यों द्वारा द्वारा ली जाने वाली कक्षाएं - विस्तार केन्द्र पर।

3 गुरुजी द्वारा ली जाने वाली कक्षाएं - महासम्मेलन में।

4 अंतिम सत्र व परीक्षा सम्बन्धी कक्षाएं मुख्य केन्द्र पर।

ग्राम कट्टावाक्कम, पोस्ट तेनेरी, जिला कांचीपुरम पिन - 631 605

मो 9444 96 17 23, 944 50 666 26, फोन 044 . 27 29 0442

गुगल सर्च से या GPRS के माध्यम से पहूंचने के लिए

Maharishi Vagbhatta Goshala & Panchgavya Anusandhan Kendra खोजें।

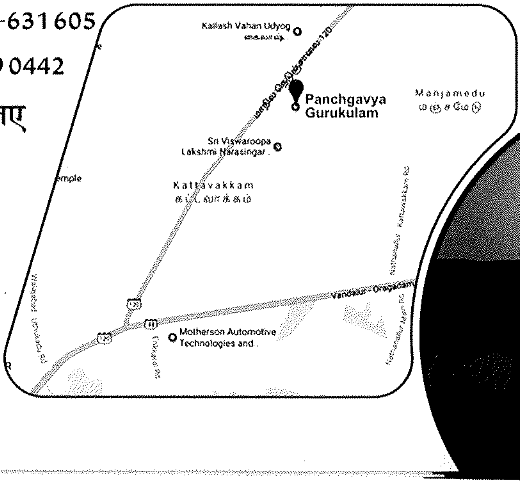

यतो गावस्ततो वयम्

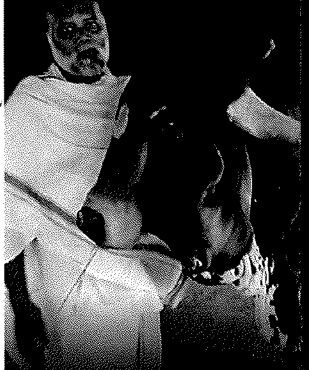

सेवारत्न गव्यसिद्धाचार्य

डॉक्टर निरंजन भाई वर्मा

एम.ए., एम.डी. (पंचगव्य),
एम. डी. (सेल), ए.ए.टी. (तमिलनाडु),
एफ. आर. एच. एस.,
एफ.डब्लू. एस. ए. एम. (यू.एस.ए.)

हेल्पलाईन
ध्वनि संपर्क :
8 9500 95000
siddhgavya@gmail.com

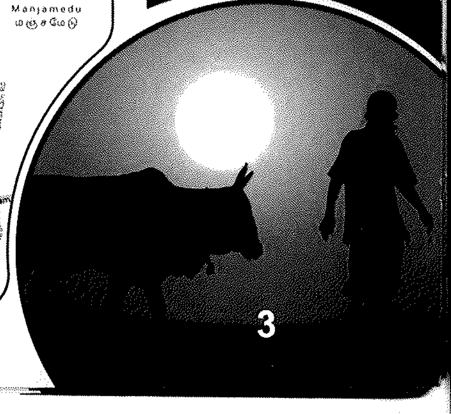

मैं सेना से सेवानिवृत हुआ, अभी भी राष्ट्रसेवा का मन। अब गोसेवा का मार्ग। एम.डी.(पंचगव्य) किया। अब भयमुक्त होकर गोरक्षा की दिशा में पंचगव्य चिकित्सा सेवा कर रहा हूँ.
-गव्यसिद्ध डॉक्टर

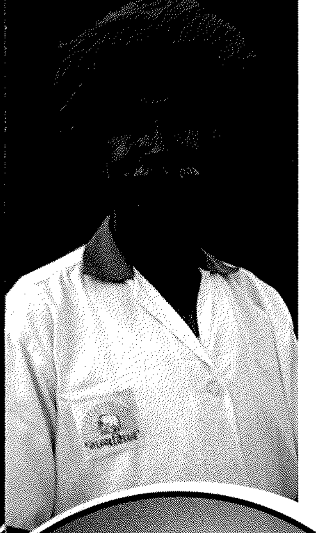

पंचगव्य चिकिसा क्यों ?

शरीर जिन पांच महाभूतों (कंपाउंड एलिमेंट) से बना है वे सभी गोमाता के गव्यों में उपलब्ध हैं। अन्यत्र नहीं। जैसे -

शरीर में भूमि तत्व है	-	जो कि गोमय के पास है।	-	गोबर
शरीर में जल तत्व है	-	जो कि क्षीर के पास है।	-	दूध
शरीर में वायु तत्व है	-	जो कि गोमूत्र के पास है।	-	वायु का तरल रूप
शरीर में अग्नि तत्व है	-	जो कि घृत के पास है।	-	घी
शरीर में आकाश तत्व है	-	जो कि छाछ के पास है।	-	मोर, तक्र, मझिगा, मठ्ठा आदि

इसके अलावा शरीर में तीन प्रकार की उर्जायें होती है जिसकी समझ केवल गव्यसिद्ध की शिक्षा में दी जाती है। आत्मा से सम्बन्धित विकारों की शिक्षा भी गव्यसिद्ध (पंचगव्य डॉक्टरों) को दी जाती है।

- अंग्रेजों द्वारा प्रतिबंधित नाड़ी और नाभि जाँच की शिक्षा भी गव्यसिद्धों को दी जाती है।
- 18 वीं सदी तक प्रचलित अंगों से रोगों की पहचान की शिक्षा भी गव्यसिद्धों को दी जाती है।

कुल मिलाकर 15 वीं सदी के भारत (नालंदा और तक्षशिला) के कालखंड में स्थापित चिकित्सा विज्ञान आधारित आज के भूगोल, वातावरण एवं परिस्थितियों के गणित के अनुसार संशोधित चिकित्सा शास्त्र, जो कि सरल और कम से कम समय में अभ्यस्त होने लायक है। यही कारण है कि पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान भारत के युवाओं के लिए भविष्य में स्वर्णिम अवसर प्रदान करने वाला है।

यह सस्ता और दुष्परिणाम रहित है, स्थाई परिणाम वाला है। इससे चिकित्सा के बाद रोगों की पुनरावृति नहीं होती। रोग जड़ से समाप्त हो जाते हैं। शरीर जैसा बायोटिक है उसी प्रकार पंचगव्य की औषधियाँ भी पूरी तरह से बायोटिक हैं। अतः औषधियाँ शरीर के साथ 100 % समन्वय करते हुए निरोगी जीवन प्रदान करती है।

हमारी औषधियाँ हैं।

गौमाता के सभी गव्य (गोदुग्ध, गोमूत्र, गोमय) जैविक अनाज, फल, फूल व मसाले सूक्ष्म मात्रा में वनस्पतियाँ तथा इन सभी के योग

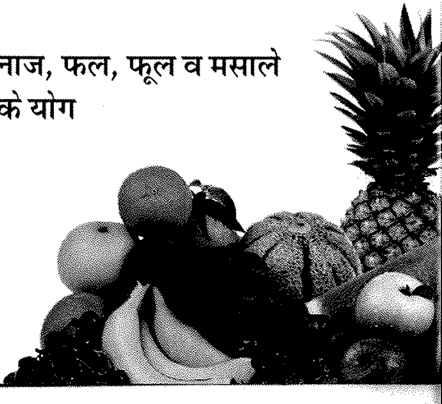

पाठ्यक्रम संचालित

1) मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी, **M.D. (Panchgavya)**

A एक वर्ष का पाठ्यक्रम एवं दो वर्ष का अभ्यासक्रम

B एक वर्ष में 04 सेमिनार, जिसमें कुल 20 दिनों की कक्षा अनिवार्य

C नामांकन – जनवरी, फरवरी एवं मार्च तथा मई, जून एवं जुलाई में।

योग्यता : 10 + 2 (सभी के लिए) 16 वर्ष से अधिक आयु हो

A मात्र 10 वीं होने पर आयु 30 वर्ष से अधिक हो।

B महिला होने पर गर्भ के अंतिम 03 माह में तीसरे और चौथे सेमिनार न आये।

C अनुमानतः खर्च रु 35 हज़ार (सभी कुछ मिलाकर)

2) एडवांस पंचगव्य थेरेपी, **A.P.T.**

A 02 वर्ष का पाठ्यक्रम एवं 01 वर्ष का अभ्यासक्रम

B एक वर्ष में 06 सेमिनार, जिसमें कुल 30 दिनों की कक्षा अनिवार्य

C नामांकन – प्रति वर्ष फरवरी में।

योग्यता : एम. डी. (पंचगव्य)

A आयु कम से कम 25 वर्ष.

B महिला होने पर गर्भ के अंतिम 3 माह में पाचवें और छठे सेमिनार न आये।

C अनुमानतः खर्च रु 1.5 लाख।

3) अंग विशेषज्ञता थेरेपी, **O.S.T**

A 06 माह का पाठ्यक्रम और 01 वर्ष का अभ्यासक्रम

B कुल 02 सेमिनार, जिसमें कुल 10 दिनों की कक्षा अनिवार्य।

C नामांकन – प्रति वर्ष अगस्त में।

D अनुमानतः खर्च रु 21 हजार।

योग्यता : एम. डी. (पंचगव्य)

F आयु कम से कम 25 वर्ष।

G महिला होने पर गर्भ के अंतिम 03 माह में दूसरे सेमिनार न आये।

मैंने गोसेवा के लिए नर्सिंग के कैरिअर को छोड़ा और एम.डी. (पंचगव्य) किया। अब नैसर्गिक पंचगव्य उपचार से गोमाता और लोगों की चिकित्सा कर रही हूँ। आर्थिक सबलता के साथ-साथ शांति भी है.
-गव्यसिद्ध डॉक्टर

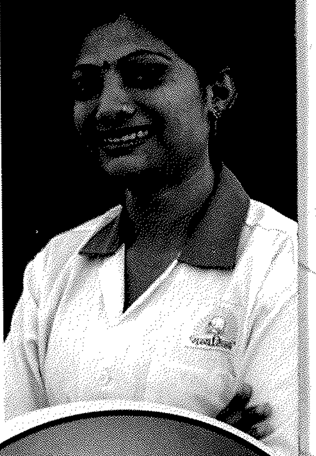

H विशेषज्ञ पाठ्यक्रम के प्रकार

- i. हृदय विशेषज्ञ (Heart Specialist)
- ii. मधुमेह विशेषज्ञ (Diabetes Specialist)
- iii. चर्मरोग विशेषज्ञ (Dermatologist)
- iv. मस्तिष्क एवं नस विशेषज्ञ (ENT Specialist)
- v. बालरोग विशेषज्ञ (Child Specialist)
- vi. नारी रोग विशेषज्ञ (Gynaecologist)
- vii. गुर्दा रोग विशेषज्ञ (Kidney Specialist)
- viii. अर्थरायटिस विशेषज्ञ (वात रोग)
- ix. फर्टिलिटी विशेषज्ञ (नपुंसकता)

4) गर्भ शुद्धि-धारण-पालन-प्रसव एवं बाल पालन पाठ्यक्रम

A 02 वर्ष का पाठ्यक्रम और 01 वर्ष का अभ्यासक्रम

B 02 वर्ष में 6 सेमिनार, जिसमें कुल 30 दिनों की कक्षा अनिवार्य।

C नामांकन – प्रति वर्ष अगस्त में।

योग्यता : एम. डी. (पंचगव्य)

D आयु कम से कम 25 वर्ष।

E महिला होने पर गर्भ के अंतिम 03 माह में पाँचवें और छठे सेमिनार न आये।

F अनुमानतः खर्च रु 02 लाख

5) पंचगव्य मेडिसिन प्रिप्रेसन टेक्नोलॉजी, P.M.P.T

A 18 माह का पाठ्यक्रम और 1 वर्ष का अभ्यासक्रम

B. 18 माह में 5 सेमिनार, जिसमें कुल 25 दिनों की कक्षा अनिवार्य।

C नामांकन – प्रति वर्ष फरवरी में।

D अनुमानतः खर्च रु 1.5 लाख।

योग्यता : 10 वीं

E आयु कम से कम 20 वर्ष।

F महिला होने पर गर्भ के अंतिम 3 माह में चौथें और पाँचवें सेमिनार मे न आये।

प्रतिवर्ष विभिन्न प्रदेशों में पंचगव्य चिकित्सा महासम्मेलन

अभी तक तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात एवं हरियाणा में सम्पन्न हो रहा है। वर्ष 2018 में केरल एवं 2019 में उड़िसा में होना निर्धारित हुआ है।

अमर बलिदानी राजीव भाई दीक्षित के जन्म एंव पुण्य तिथि पर आयोजित तीन दिवसीय महासम्मेलन प्रतिवर्ष अलग-अलग प्रदेशें में किया जाता है। जिसमें कई उत्कृष्ट कार्य किये जाते हैं।

- वर्ष भर में उतीर्ण पंचगव्य के डॉक्टर अर्थात गव्यसिद्धों का दीक्षांत समारोह।
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले गव्यसिद्धों को पुरस्कार एवं सम्मान।
- पंचगव्य विद्यापीठम के सभी विस्तार केन्द्रों के संचालकों एवं आचार्यो की बैठक।
- भारत के सभी प्रदेशों के सभी भाषाओं के गव्यसिद्धों, गउविज्ञानियों का महासंगम।
- विशाल प्रभात फेरी से गउरक्षा के प्रति जन-जागरण।
- उस प्रदेष की कला, संस्कति एवं परम्परा को पुनर्जीवित करने हेतु कार्यक्रम।
- विशाल जनसभा के लिए भी संपूर्ण जैविक भोजन की व्यवस्था।
- भारत भर के संभी नए-पुराने गव्यसिद्धों की संयुक्त कक्षा ताकि सभी नए अनुसंधान से परिचित हो सकें।
- महासम्मेलन वाले प्रदेश में गुरुजी के अधिकाधिक व्याख्यान से जन-जागरण।

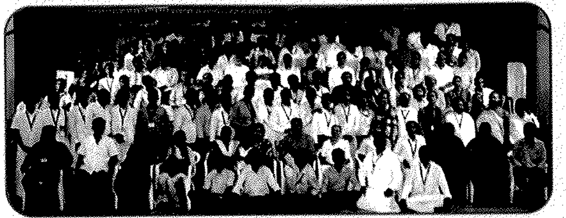

2013

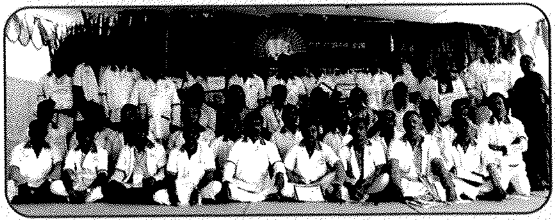

2014

2015

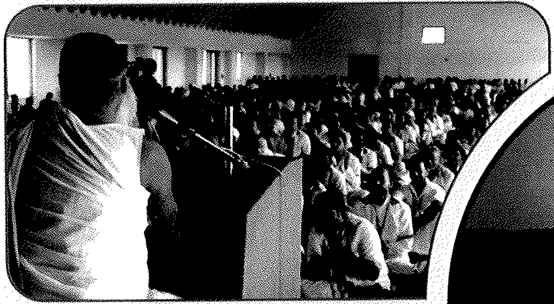

2016

महासम्मेलन केवल दीक्षांत समारोह नहीं, विविध प्रदेश, विविध भाषाओं के शिष्यों का एक समागम है। जहाँ वेश - भूषा संस्कृति, परम्परा जो विलुप्त हो रही है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास है।

नैसर्गिक वातावरण में ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरुकुलिय व्यवस्था.

गुरू, ज्ञान और गाय।

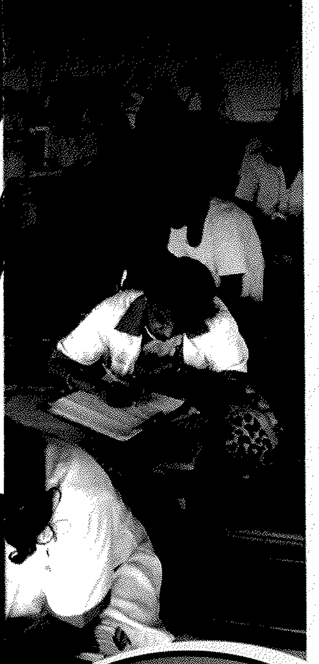

ग्रामीण नैसर्गिक व्यवस्था

यह गुरुकुलीय व्यवस्था के अंतर्गत संचालित है, जिसमें शिष्यों को गुरुकुल केन्द्रों पर सेमिनार के अंतर्गत निवास कर, शिष्य के रूप में शालीनता से रहते हुए ज्ञानोपार्जन करना पड़ता है।

- निवास की व्यवस्था ग्रामीण स्तर पर रहती है।
  लेकिन महिलाओं अथवा लड़कियों के लिए अलग से व्यवस्था होती है।
- भोजन यथा संभव जैविक / प्राकृतिक उपलब्ध करने का प्रयास होता है।
- सेमिनार के समय किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं को रखना या उपयोग में लाना वर्जित होता है।
- यह पाठ्यक्रम केवल शाकाहारी लोगों के लिए है। अतः यदि कोई मांसाहारी इस शिक्षा को प्राप्त करना चाहे तो उसे पहले शाकाहारी बनना पड़ता है।
- सभी पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार का नशा (शराब, तम्बाकू, गुटका आदि) करने वालों के लिए नहीं है।
- शिष्यों को भारतीय परिधान (जो शिष्य जिस प्रदेश के हैं, वहां की भेष - भूषा) में रहना आवश्यक है, अथवा धोती - कुर्ता।
- कक्षा - वर्षा ऋतु में प्रातः 5:00 बजे से और अन्य सभी ऋतुओं में प्रातः 4:00 बजे से प्रारंभ होती है जो रात्रि 9:00 बजे तक चलती है।
- कक्षा में बैठने के लिए आसन और डेस्क की व्यवस्था होती है।
- एक वर्ग में 35 शिष्यों की व्यवस्था होती है जिसमें 10 महिलाओं के लिए आरक्षित होता है।
- बिमारों का नामांकण नहीं होता, वे पहले चिकित्सा करा लें।
- जाति और धर्म का भेद नहीं, राष्ट्रीयता का भाव हो।
- यात्रा और गुरुकुल निवास के दौरान यदि कोई दुर्घटना आदि होती है तो स्वयं जिम्मेदार होंगे।
- **Madurai (Tamilnadu) Jurisdiction.**

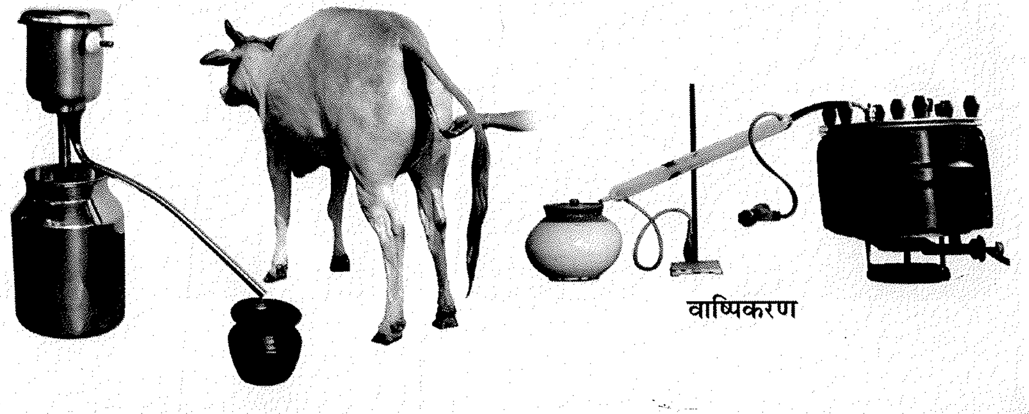

उच्च कोटि के पंचगव्य विशेषज्ञ वैद्य (गव्यसिद्ध) तैयार करने हेतु पंचगव्य गुरुकुलम् सदैव संकल्पबद्ध

उच्च कोटि के ज्ञान के लिए बड़े महलनुमा भवन नहीं, गऊमाता की साधना और गुरु के सानिध्य की मात्र आवश्यकता है।

पंचगव्य गुरुकुलम् में पाठ्यक्रम चलाने का उद्देश्य:

उच्च कोटि के वैज्ञानिक एवं दक्ष लोग तैयार करना है जिनकी चिकित्सा विज्ञान एवं वैज्ञानिक प्रणाली के मूलभूत सिद्धांतों पर मजबूत पकड़ हो, अपनी विशेषज्ञता में गहरी समझ हो, नई समस्याओं को सुलझाने की अभिनव क्षमता हो और निरंतर सीखते रहने एवं समय-समय पर विभिन्न ज्ञानियों से पारस्परिक मिलाप की भावना हो। इसके अलावा भी विद्यार्थियों को चाहिए कि वे देश एवं समाज की मांग और अभिलाषा के अनूरूप अपनी निष्ठा, साहस, जागरुकता, संवेदनशीलता को स्वतंत्र रूप से विकसित करें।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के प्रकृति, हमारे स्वास्थ्य संबंधी पहलुओं एवं उनके बौद्धिक कौशल संबंधी ज्ञान को बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है। जिसमें भारत की प्राचीनतम विद्या 'नाड़ी विज्ञानम्' एवं 'नाभि विज्ञानम्' जो लुप्तप्राय हो चुकी है, उसे पुनर्जीवित कर लोगों को रोगों की जाँच में हो रहे भारी खर्च से मुक्ति दिलाना है। इन सभी उद्देश्यों के लिए निःस्वार्थ भाव से पंचगव्य गुरुकुलम् सदैव संकल्पबद्ध है।

मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी एवं अन्य पाठ्यक्रम आज के युवाओं को उच्च कोटि की चिकित्सा सेवा देने के लिए तैयार करने की सोच के साथ शुरु किया गया है। जिसमें युवाओं का भविष्य उज्जवल है।

पाठ्यक्रम के लाभ

- सभी प्रमाण-पत्र भारत सरकार एवं तमिलनाडु सरकार द्वारा चलाए जा रहे बी.एस.एस. (भारत सेवक समाज) द्वारा प्रदान किए जाएंगे।
- यह प्रमाण-पत्र संपूर्ण भारत के रोजगार कार्यालयों में पंजीकृत किए जा सकते हैं।
- स्वयं के पंचगव्य चिकित्सा सेवा केन्द्र शुरु करने के लिए बैंकों से लोन की सुविधा हो सकेगी।
- भारत एवं विदेशों में सरकारी चिकित्सालयों, विभिन्न विशेषज्ञता वाले चिकित्सालयों एवं निजी औषधि निर्माण ईकाईयों में रोजगार के अवसर होंगे।
- पीड़ित लोगों को सौ प्रतिशत परिणाम वाला सुरक्षित उपचार प्रदान करना।
- स्वयं का चिकित्सालय खोलकर पंचगव्य थेरेपी का अभ्यास करना सौ प्रतिशत कानूनी वैध होगा।

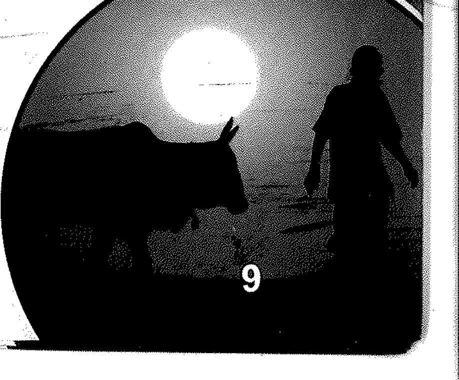

पंचगव्य चिकित्सा थेरेपी से चिकित्सा करना 100% कानूनी वैध है.

न्यायालय के एक आदेश के अनुसार पुलिस व अन्य कर्मचारी पंचगव्य (AM) के अभ्यास में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

कानूनी मान्यता

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केन्द्र, कांचीपुरम स्थित पंचगव्य गुरुकुलम् सेल थेरेपी इंस्टिट्यूट के अंतर्गत कानूनन रूप से शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए अधिकृत है जो गव्यसिद्धाचार्य सेवारत्न डॉ निरंजन वर्मा एवं डॉ. जी. मनी (एम.डी., ए.एम., पी.एच.डी.), मदुरै, तमिलनाडु के निर्देशन में संचालित है, जो मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै पीठ के 2007 के आदेश क्रमांक सी.ओ.पी.(एमडी) क्रमांक 9466 दिनांक 14-09-2007 के अंतर्गत पंजीकृत है।

वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति (पंचगव्य थेरेपी) में अभ्यास करना भारतीय संविधान की धारा 19 (1) एवं धारा 19 (6) के अंतर्गत पूर्णत: वैध है। क्योंकि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति में अभ्यास करना इंडियन मेडिकल काउंसिल एक्ट के दायरे के अंतर्गत नहीं आता है, इसलिए मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के पत्र क्रमांक एमसीआई-34-(1) / 96. मेड./ 10984, दिनांक 05-08-1996 के अनुसार वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति में अभ्यास करने के लिए मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया से अलग से आज्ञा / पंजीकरण की आवश्यकता नहीं है।

पुलिस को वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति (पंचगव्य थेरेपी) में अभ्यास करने वाले अभ्यार्थी को उसके प्रमाण-पत्र के दायरे में अभ्यास करने से रोकने या उसके साथ अन्याय करने का कोई कानूनन अधिकार नहीं है। जैसा कि मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै पीठ के 2007 के आदेश क्रमांक सी.ओ.पी.(एमडी) क्रमांक 8085, दिनांक 09-08-2007 के अंतर्गत है।

इसके अतिरिक्त, मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै पीठ में सन् 2012 में दायर की गई एक याचिका (रिट पेटिशन) क्रमांक 2452 पर दिनांक 25 मार्च 2010 को दिए गए एक आदेश के अनुसार पुलिस कर्मचारी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति (पंचगव्य) के अभ्यास में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

पंचगव्य थेरेपी में चिकित्सा करना वैध है

विशेष : पंचगव्य गुरुकुलम् अपने सभी विद्यार्थियों को उनके स्वयं के नाम से वैध कानूनन प्रमाण-पत्र (Legal Medical Certificate) प्रदान करवाने का प्रबंध करेगा। इसके लिए होने वाला व्यय विधार्थी द्वारा देय होगा।

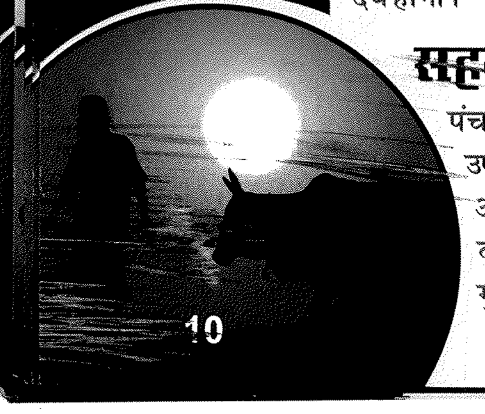

सहयोग

पंचगव्य गुरुकुलम् अपने अभ्यर्थियों को भारत की विभिन्न गौशालाओं से आवश्यक औषधियाँ उपलब्ध करवाने में सहयोग करेगा एवं स्वयं अभ्यर्थी द्वारा गौशाला स्थापित किये जाने पर उसके आस-पास के लोगों में पंचगव्य के प्रति आस्था एवं जागरुकता लाने में यथासंभव सहयोग प्रदान करेगा। व्याख्यान आयोजित करने पर व्याख्यान, शिविर आदि को क्रियान्वित कर, जैसा की गुरुजी 2011 के बाद से भारत भ्रमण कर इस कार्य को कर रहें है।

पंचगव्य पाठ्यक्रम में संभावनाएं

- पंचगव्य थेरेपी एक संपूर्ण चिकित्सा पद्धति है जिससे सभी रोगों की चिकित्सा संभव है।
- पंचगव्य चिकित्सा पद्धति मानवीय शरीर को एक संपूर्ण भौतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं से समझती है, इसलिए यह सेवा के क्षेत्र में सबसे पवित्र कर्म है।
- पंचगव्य चिकित्सा पद्धति में गौमूत्र, गोबर एवं दूध (क्षीर) मुख्य गव्य के रूप में तथा छाछ एवं घृत उपगव्य के रूप में और इनके संयोग मुख्य औषध है। साथ ही औषधियों के निर्माण के समय अल्प मात्रा में प्राकृतिक जड़ी-बूटियाँ भी उपयोग की जा सकती है।
- पंचगव्य शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- पंचगव्य चिकित्सा पद्धति सभी गंभीर, विकट, संक्रामक एवं जन्मजात बीमारियों से बचाव तथा आरोग्य पर जोर देती है और यह प्रत्येक जीव के निरोगी जीवन के लिए प्रतिबद्ध है।
- यह सबसे कम खर्च में संपूर्ण आरोग्य प्रदान करती है, अत: यह निर्धन से निर्धन एवं जरुरतमंद व्यक्ति के लिए अत्यंत सुलभ है।
- स्वास्थ्य प्रदान करने के कार्य में लगे लोगों के लिए इस पद्धति में असीमित संभावनाएं हैं।
- पश्चिमी चिकित्सा पद्धति के लगातार हो रहे प्रचार-प्रसार के बावजूद आज भी देश में चिकित्सकों की भारी आवश्यकता है। देश की 130 करोड़ से अधिक जनसंख्या पर कुल लगभग 30 लाख ही पंजीकृत चिकित्सक है। इस कमी को पूरा करने के लिए वैकल्पिक (भारतीय) चिकित्सा पद्धतियां ही एकमात्र उपाय है। इसमें आज भी बहुत अधिक संभावनाएं है, इसीलिए संपूर्ण विश्व में इसकी धाक जम रही है।
- स्वयं की भारतीय नस्ल की गाय की गौशाला प्रारंभ करना उससे पंचगव्य की औषधियां तैयार करना और स्वयं के पंचगव्य चिकित्सा सेवा केंद्र चलाकर स्वयं और गौशाला को आत्मनिर्भर बनाना।

पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान के तहत पौराणिक जाँच विधा 'नाडी विज्ञानम्' और 'नाभि विज्ञानम्' सिखलाई जाती है।
- आकांक्षा आर्या

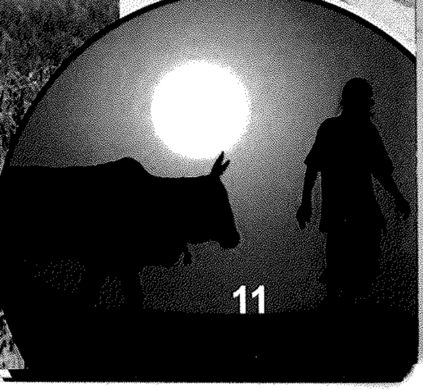

मेधावी गव्यसिद्ध डॉक्टरों को प्रति वर्ष 25 से अधिक सम्मान एवं पुरस्कार दिए जाते हैं।

पंचगव्य पाठ्यक्रम के उद्देश्य

भारत के सभी क्षेत्रों के, विभिन्न औषधियों एवं चिकित्सा विज्ञान के जानकारो या उनमें रूचि रखने वाले जो समाज एवं देश की सेवा करना चाहते है उन्हें पंचगव्य थेरेपी सीखने के साथ-साथ भारत की अन्य चिकित्सा पद्धतियों (जो वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत आती हो एवं मूलतः भारतीय हो) का ज्ञान लेने के लिए भी मार्गदर्शन मिलेगा।

- यह पाठ्यक्रम भारत की सभी गौशालाओं को स्वावलंबी बनाते हुए उन्हें समाज के लिए चिकित्सकीय परिप्रेक्ष्य में भी उपयोगी बनाने में हितकर होगा।
- विभिन्न रोगों से ग्रस्त आमजन को रोगमुक्त करने के लिए कानूनी रूप से वैध चिकित्सा प्रदान करना।
- पंचगव्य एवं भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में लोगों को जागरूक करना।
- भारत के युवाओं के लिए स्वावलंबी, सम्मानजनक एवं ऋणमुक्त रोज़गार तैयार करना।

हमारे उद्देश्य

- भारतीय वंश की गायों की सुरक्षा, संरक्षा एवं संवर्द्धन।
- पंचगव्य अनुसंधान, विकास एवं उत्पादन।
- पंचगव्य आधारित कृषि एवं उद्योग व्यवस्था की पुनर्स्थापना।
- पंचगव्य एवं प्राकृतिक कृषि का प्रचार, प्रसार एवं प्रशिक्षण।
- महर्षि वाग्भट्ट आधारित रोग मुक्त एवं स्वावलंबी भारत का निर्माण।

महासम्मेलन में सूर्य योग की कक्षा लेते हुए सूर्ययोगी श्री उमाशंकर जी

नामांकन प्रपत्र

पंचगव्य विद्यापीठम् , कांचीपुरम 631605

नाम ______________________

पिता / पति का नाम ______________________

पता ______________________

____

जिला ____________ प्रदेश ____________ पिन ____________

मोबाइल ____________ ईमेल ____________

शिक्षा ____________ वर्ष ____________

शिक्षा संस्थान का नाम व स्थान ______________________

पाठ्यक्रम जिसमें नामांकन लेना चाहते है ______________________

जमा की गई राशि का विवरण ______________________

विद्यापीठ्म विस्तार, जिसमें नामांकन लेना चाहते हैं ______________________

बैंक विवरण जिसमें राशि जमा करनी है:

Panchgavya Vidyapeetham

SBI State Bank of India

A/c No : **3659 5299 221** | IFSC Code : **SBIN 0016 285**

Branch: Wallajabad, Kanchipuram, Tamil Nadu

नकद राशि नहीं ली जाती है। ऑनलाईन भरे अथवा डिमांड ड्राफ्ट से जमा करें।

राशि : जमा किये गए बैंक का विवरण ______________________

आवेदन पत्र केवल स्पीड पोस्ट से भेजें

भेजने का पता : पंचगव्य विद्यापीठम् , ग्राम – कट्टावाक्कम, पोस्ट – तेनेरी,
जिला – कांचीपुरम, पिन: 631 605, मोबाइल : 944 50 666 26,
ईमेल : gomaata@gmail.com

www.panchvidya.org पर ऑनलाइन नामांकन की सुविधा भी उपलब्ध है।

'पंचगव्य चिकित्सा थेरेपी' आधुनिक चिकित्सा विज्ञानम् की आकाशिए ऊंचाई छूने की ओर अग्रसर.

तकनीक वैदिक, अर्थात् नैसर्गिक प्रकृति के संतुलन के साथ। परन्तु विचार और सुविधाएं आधुनिक।

ऑनलाइन पंचगव्य चिकित्सा

अँगुलियों की चाल पर दुष्परिणाम रहित पंचगव्य चिकित्सा सेवा की योजना

लक्ष्य : सभी गव्यसिद्ध डॉक्टरों को घर बैठे चिकित्सा सेवा का अवसर

अर्थात 100% रोजगार

यह एक अंतरराष्ट्रीय कंपनी होगी, जिसकी स्थापना पर कार्य चल रहा है। इसके द्वारा भारत एवं दुनिया के लोगों को ऑनलाइन पंचगव्य चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। भारत के लोगों को घर के पास ही गव्यसिद्धर डॉक्टर चिकित्सा सेवा के लिए उपलब्ध होंगे। इस कड़ी में सभी योग्य गव्यसिद्धर भाग लेंगे। यह कंपनी गव्यसिद्धों को घर बैठे रोगी भेजेगी। जिससे गव्यसिद्धों को बिना चिकित्सालय खोले ही पंचगव्य चिकित्सा सेवा करने का आर्थिक लाभ मिल सकेगा।

यह कार्य 4 चरणों में पूरा होगाः

1 मोबाइल एप के माध्यम से रोगी गव्यसिद्ध डॉक्टर से संपर्क करेंगे। रोगियों को मोबाइल ऐप सबसे नजदीक के 'गव्यसिद्ध डॉक्टर' की जानकारी प्रदान करेगा।

2 जब रोगी 'गव्यसिद्ध डॉक्टर' के पास जाएगा तब उसकी केवल जांच का कार्य गव्यसिद्ध डॉक्टर करेंगे और जांच (नाड़ी और नाभि) की रिपोर्ट मोबाइल ऐप पर अपलोड कर देंगे।

3 भारत के सभी प्रदेशों में निर्धारित स्थान पर गव्यसिद्ध डॉक्टरो का पैनल बैठेगा। जो मोबाइल ऐप से मरीज की रिपोर्ट के आधार पर औषधि और पथ्य को निर्धारित करेगा। इसकी सूची गव्यहाट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को भेज दी जाएगी।

4 'गव्यहाट' गव्यसिद्ध डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किए गए पंचगव्य और पथ्य के सामानों की डिलीवरी ऑनलाइन उपलब्ध कराएगा।

इस प्रकार चार चरणों में रोगियों की चिकित्सा होगी।

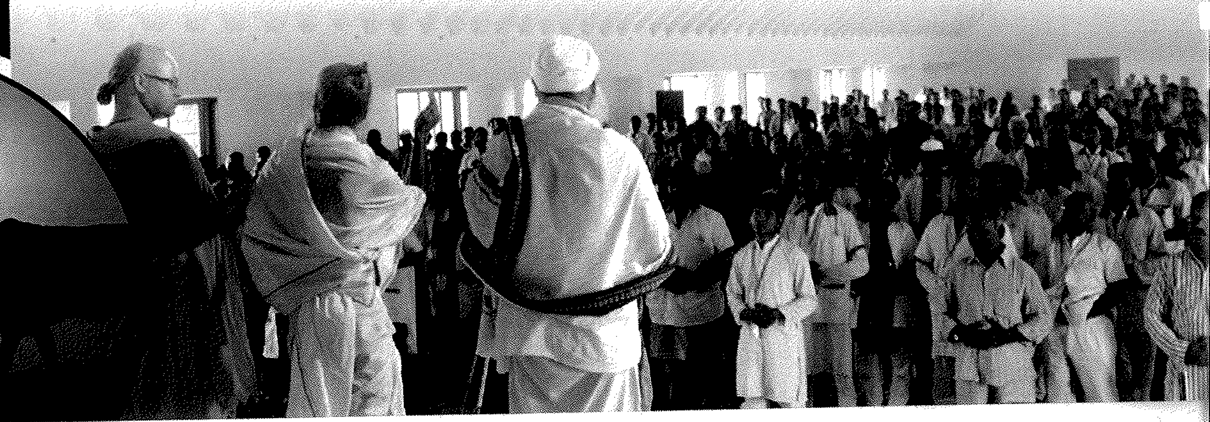

पंचगव्य डॉक्टर एसोसिएशन

तमिलनाडु सोसायटी एक्ट 1982 के अंतर्गत पंजीकृत
भारत सरकार, सोसायटी एक्ट 1982 के अंतर्गत पंजीकृत

हमारा लक्ष्य : सभी गव्यसिद्ध डॉक्टरों को कानूनी अड़चन से भयमुक्त करना और गुणवत्ता बढ़ाने का राष्ट्रीय मंच प्रदान करना

यह ऐसोसिऐशन गुरूकुलम् विद्यापीठम् से तैयार डॉक्टरों को अनुकूल वातावरण तैयार कराती है। प्रतिवर्ष एक राष्ट्रीय स्तर का 'पंचगव्य चिकित्सा महासम्मेलन' और प्रत्येक प्रदेश में कम से कम एक राज्य स्तरीय 'पंचगव्य चिकित्सा सम्मेलन' कराती है। इससे लोगों में गव्यों के प्रति जागरुकता बढ़ती है। चिकित्सा के विषयों पर भारत भर में सर्वेक्षण जैसे कई सामाजिक / वैज्ञानिक कार्य करती है।

पंचगव्य डॉक्टर्स एसोसिएशन का केंद्रीय कार्यालय दिल्ली में दिनांक ०२ अक्टूबर के पावन अवसर गांधी जयंती एवं शास्त्री जी के जन्मदिन पर देश में पहली बार शुभारंभ हुआ। कार्यालय का शुभारंभ सेवारत गव्यसिद्धाचार्य डॉ. श्री निरंजन भाई एवं देश भर से आये गव्यसिद्ध डॉक्टरों ने पारंपरिक विधि से पंचगव्यों के द्वारा हवन-यज्ञ एवं गौ सुक्तों से किया। देश के पहले, भारत सरकार द्वारा पंजीकृत, पंचगव्य डॉक्टर्स एसोसिएशन के कार्यालय को समर्पित करते हुए गुरुजी ने बताया कि यह कार्यालय सभी गव्यसिद्धों की देशहित एवं स्वास्थ्य से जुड़ी कार्य योजनाओं को मूर्त रूप देने में मील का पत्थर साबित होगा।

संगठन की प्रमुख जिम्मेदारियों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया दिल्ली स्थित केंद्रीय कार्यालय

1. देशभर के गव्यसिद्धों के हितों की रक्षा करने की दिशा में कार्य करेगा।
2. देश भर में स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियों एवं पंचगव्य से उसके समाधान पर कार्य करेगा।
3. उच्च गुणवत्ता की पंचगव्य औषधि उपलब्ध कराने में आ रही कठनाईयों पर कार्य करेगा।
4. पंचगव्य कार्यशालाएं एवं चिकित्सा शिविरों का आयोजन करेगा इत्यादि।

इसी शुभ अवसर पर गुरुजी के नेतृत्व में देशभर में पंचगव्य और गौमाता की महिमा को क्रांति के रूप में फैलाने हेतु विभिन्न टीमों का गठन भी किया गया। ये केंद्रीय टीमें गुरुजी के कुशल नेतृत्व में भारत के सभी जिलों में पंचगव्य विद्यापीठ्म् की शाखाएं खोलेगा। गौ विज्ञान कथाओं का आयोजन करेगा, पंचगव्य औषधियों पर अनुसन्धान कार्य करेगा, पंचगव्य औषधियों की जांच इत्यादि जैसे कार्य करके देश भर में गौ माँ का वैज्ञानिक महत्त्व, पर्यावरण रक्षा आदि पर प्रामाणिक कार्य करेगा।

अमर बलिदानी राजीव भाई दीक्षित के सपनों को आगे बढ़ाने के लिए गुरुजी ने अथक प्रयास करते हुए पंचगव्य डॉक्टर्स एसोसिएशन को पंजीकृत कराया और उसका सुखद परिणाम आज सामने है।

दिल्ली स्थित केंद्रीय कार्यालय :
एच-159, लाल कुआँ, मेन ऍम. बी रोड, नई दिल्ली - 110044
हेल्पलाईन ध्वनि संपर्क : 8 9500 95000, 9540 998 998
siddhgavya@gmail.com

पंचगव्य डॉक्टरों का राष्ट्रीय मंच, निरोगी भारत के सपनों का अन्दोलनीय नेटवर्क। अभी तक 23 राज्य और 11 भारतीय भाषाएं।

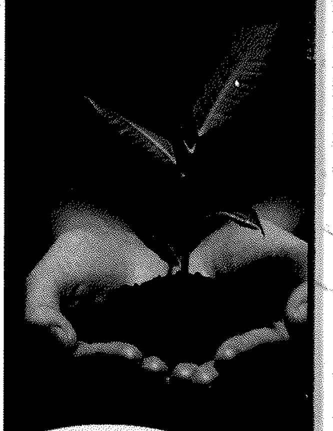

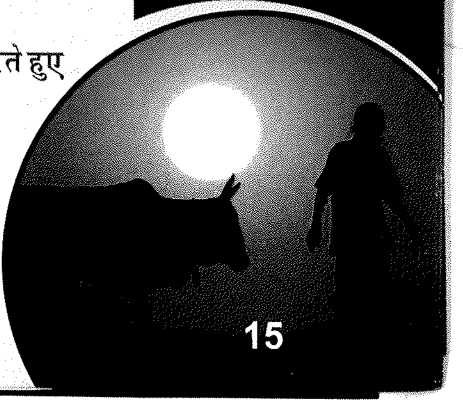

गव्यों का विकेन्द्रित
उत्पादन और
विपणन।

'गव्यहाट' इंडिया प्राइवेट लिमिटेड

इन्टरनेट पर अँगुलियों की चाल से मंगाइये श्रेष्ठ गव्यउत्पाद

हमारा लक्ष्य : सभी गव्यसिद्ध डॉक्टरों के उत्पाद को बाजार मिले और वे आर्थिक रूप से सबल बनें।

यह एक अंतरराष्ट्रीय कंपनी है जो महिला गव्यसिद्धों द्वारा संचालित है। इस कंपनी का उद्देश्य केवल गव्यसिद्धों के उत्कृष्ट गव्य उत्पादों की जाँच कर उसे भारत तथा विदेशों में बाजार देना है। साथ ही इससे गव्यसिद्धों के अधिकाधिक उत्पादों को सहजता से बाजार दिया जा सके और उनकी आर्थिक स्थिति समृद्ध हो सके, गोपालन स्वावलम्बी बन सके, इसका संचालन महिला गव्यसिद्धों के हाथों में है। अब आप मोबाइल के कुछ बटन दबाकर श्रेष्ठ गव्य उत्पाद मंगवा सकते हैं। अपने जिले की भारतीय नस्ल की गऊमाता के गव्यों के ऐसे उत्पाद जो पंचगव्य डॉक्टरों के हाथों से तैयार किये गए हैं। जिसके उत्पादन में सभी वैदिक आधारों को प्राथमिकता दी गयी है। यहाँ पर क्वालिटी कण्ट्रोल की जिम्मेदारी स्वयं 'पंचगव्य डॉक्टर एसोसिएशन' ने ली है। हमारी कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं :

1) स्थानीय गऊमाँ के गव्यों पर आधारित उच्च कोटि के गव्य उत्पादों को प्राथमिकता के आधार पर स्थानीय जरुरतमंदों तक पहुँचाने का सेवा कार्य।

2) इसमें केवल उन गव्यसिद्धों द्वारा उत्पादित उच्च कोटि के गव्य उत्पादों को ही बाजार दिया जाता है, जिनके पास शुद्ध भारतीय नस्ल की गऊमाताएं हैं।

3) यह पूरी तरह नारी गव्यसिद्धों द्वारा संचालित अंतरराष्ट्रीय कंपनी है। जो भारतीय नारियों को गऊमाता से जोड़कर, उन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिए संकल्पित है।

4) इसमें पंचगव्य गुरुकुलम्, विद्यापीठम्, कांचीपुरम एवं उसके विस्तार केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त गव्यसिद्धों के ही उत्पादों को बाजार दिया जाता है।

5) यहाँ पर ग्राहकों के निवास स्थान की ऋतु-काल एवं भूगोल को ध्यान में रखते हुए ही उत्पाद बनाये और घर तक पहुंचाए जाते हैं।

हमारा एक मात्र उद्देश्य

गऊमाँ के नवगव्यों की महिमा व गुणवत्ता से
गऊमाँ की रक्षा एवं सम्मान की पुनःस्थापना

www.gavyahaat.org • haatgavya@gmail.com

हेल्पलाईन ध्वनि संपर्क : 8 9500 95000, 9540 998 998

सृष्टि की सबसे बडी खोज

क्षीर सागर-मेरु पर्वत और दानव-देवताओं द्वारा प्रसिद्ध घटना कथा जो भारत के प्रत्येक घरों में ब्रह्म मुहूर्त के दौरान घटित होती रही है अर्थात् गोमाता के दूध से बना दही और उसमें मंथन की प्रक्रिया से निकला हुआ मक्खन व उससे निर्मित घृत यह सृष्टि की सबसे बड़ी खोज है। इसी खोज की प्रेरणा से ही ''बीग बैग थ्योरी'' निकाली गई और बतलाया गया कि सृष्टि के निर्माण में लगे हुए सुक्ष्म कण ही विष्णु ऊर्जा और शिव ऊर्जा है। इन दोनों ऊर्जाओं के सम्मलित रहने के लिए एक ब्रह्म ऊर्जा भी है जो अदृश्य है। इस अदृश्य ऊर्जा में प्रज्ञा रूपी चेतना है। सृष्टि में इस ऊर्जा की अधिकता केवल देशी गाय के दूध से वैदिक प्रक्रियाओं द्वारा निकाले गए मक्खन में ही है। इसलिए मक्खन रूपी गाय ही इस सृष्टि में साक्षात् ब्रह्म ऊर्जा है। जिसे ग्रहण कर जीव जगत बुद्धिशाली, बलशाली और सृष्टि को संतुलित रखे, ऐसा चित्त प्रवृति वाला होता है।

भारत का भविष्य

जब भारत के बच्चों को दोबारा मक्खन रूपी ब्रह्म ऊर्जा और गोमाता का सानिध्य प्राप्त होगा तभी इस धरती पर फिर से ऋषि और वीर पुरुष पैदा होंगे। अतः किसी भी कीमत पर यह कार्य करें। तभी हम भारत को विदेशी कम्पनियों की लूट से मुक्त कराकर स्वदेशी और स्वावलंबी भारत बना सकते हैं।

थीम वर्ष 2015 क्षीर मंथन; सृष्टि की सबसे बड़ी खोज

गुरुजी की गौसाधना से पुनर्उत्पन्न

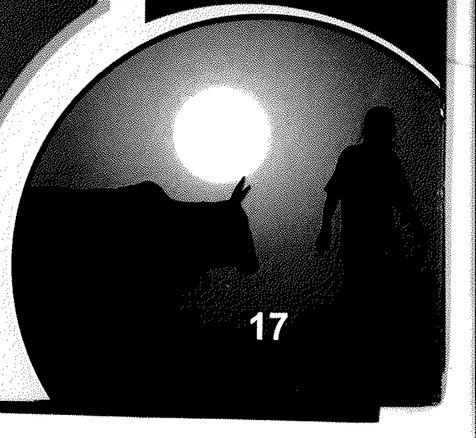

थीम वर्ष 2016
गऊमाँ से संपूर्ण योग

गुरुजी की गौसाधना से पुनर्उत्पन्न

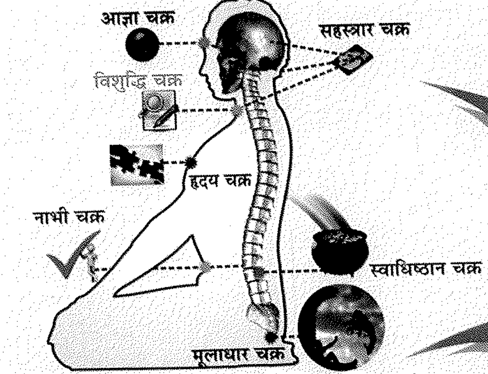

शरीर में ऊर्जा चक्रों की भौतिक क्रियाएं।

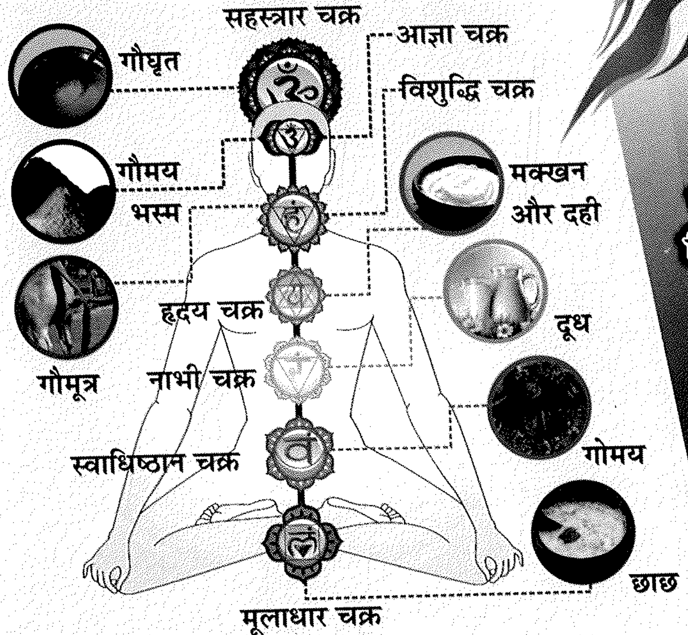

शरीर में ऊर्जा चक्रों का गव्यों के साथ संबंध

आज्ञा चक्र : चित्र खींचने वाला कैमरा (तृतीय नेत्र)

सहस्त्रार चक्र : सौरमंडल के निर्माण से अंत तक की घटना का ज्ञान संग्रहित

विशुद्धि चक्र : यहां पर विचारों का संपादन होता है।

हृदय चक्र : यहां पर संपादित विचारों का क्रियान्वयन होता है।

नाभी चक्र : यहां पर किया गया कार्य पचता है।

स्वाधिष्ठान चक्र : यहां पर सभी पुण्य कार्य संग्रह होते हैं और जब पूण्य कार्य से घड़ा भर जाता है। तब वह मूलाधार चक्र की ओर प्रस्थान करता है।

मूलाधार चक्र : इसी चक्र के माध्यम से हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

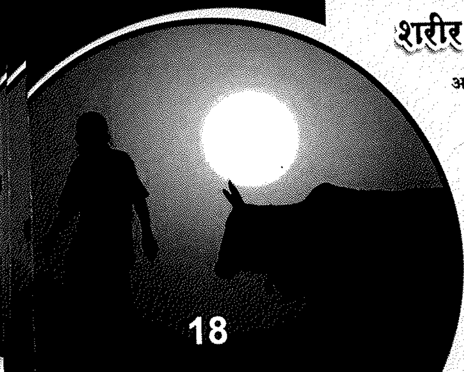

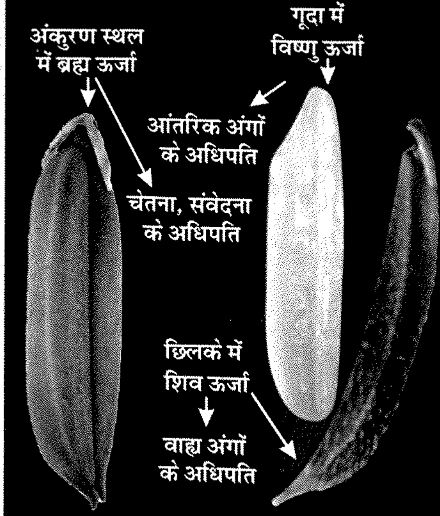

हायब्रीड (बीटी) अर्थात् चेतना विहीन

हायब्रीड अनाज, सब्जी, फल, फूल व मसालों का सीधा अर्थ हायब्रीड़ (अधिक उत्पादन) से समझाया जाता है लेकिन वास्तविकता - हायब्रीड़ अर्थात् चेतना विहीन (ब्रह्म ऊर्जा रहित) से है। इसीलिए हायब्रीड़ से दूबारा पौधे नहीं उगते, उग गए, तो फूल और फल नहीं लगते।

अतः हमें अपनी चेतना की रक्षा करनी है तो हायब्रीड़ अनाज, सब्जी, फल, फूल व मसालों का बहिष्कार करना होगा।

हायब्रीड तथा जरसी, हॉलिस्टियन, फ्रिजियन व क्रास, (गाय की तरह दिखने वाली जीव) भारतीय कृषि व समाज व्यवस्था को नष्ट करने की दिशा में ब्रह्मास्त्र जैसा है।

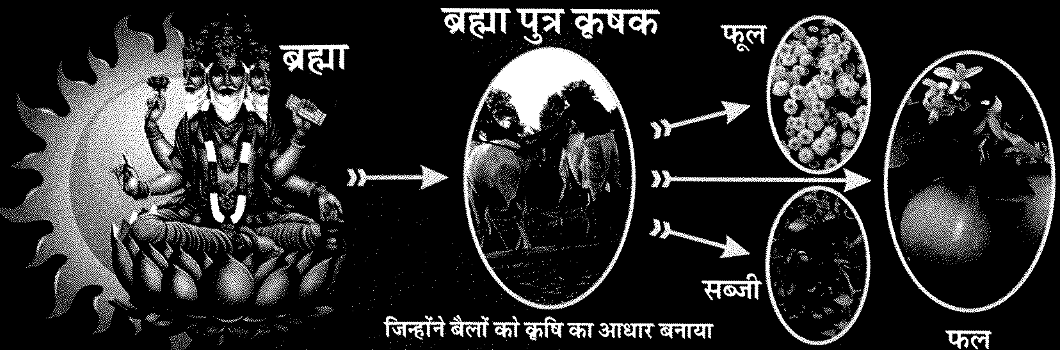

थीम वर्ष 2017
वसुधैव कुटुम्बकम्

भारत का समाज शास्त्र

गुरुजी की गौसाधना से पुनर्उत्पन्न

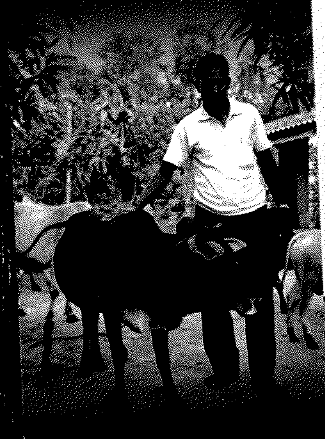

गव्यसिद्ध

पंचगव्य गुरुकुलम्, पंचगव्य विद्यापीठम् व पंचगव्य डॉक्टर असो. का मुख पत्र (वार्षिक)

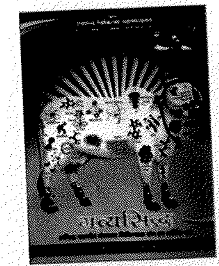

2014

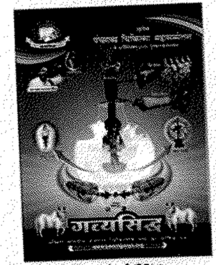

2015

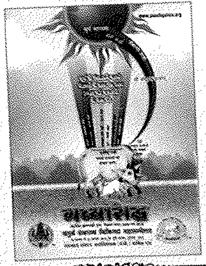

2016

2017

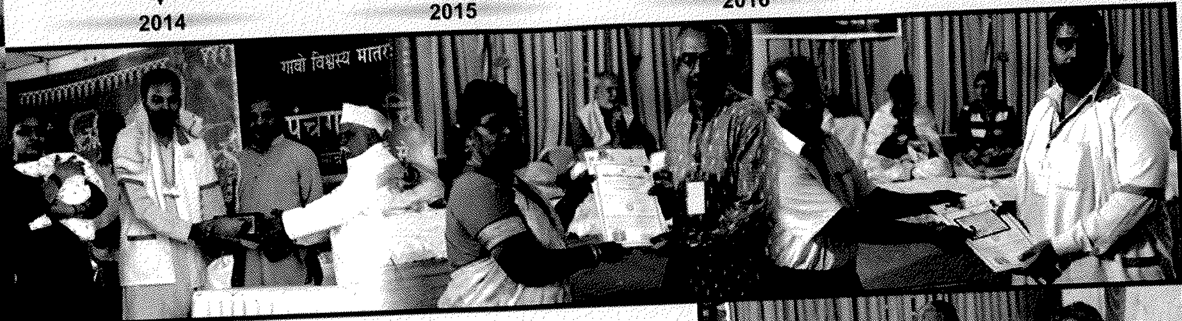

जिसमें प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जाते हैं।

1. पंचगव्य के विषय में प्रतिवर्ष के शोध पत्र।
2. गव्यसिद्धों के उत्कृष्ट लेख व विचार।
3. पंचगव्य से निरोगी हुए रोगियों की क्लिनिकल रिपोर्ट।
4. नए-नए पंचगव्य उपकरण के विकास पर लेख।
5. वर्ष भर में गुरुजी के चुनिंदा लेख व शोध पत्र।

यह झारखंड प्रदेश की मगही गाय है जो पहाड़ों पर चढ़कर वनस्पति चरती है और अमृत तुल्य गव्य प्रदान करती है।
गव्यसिद्ध
रीतलाल प्रसाद वर्मा

गऊ कार्य -: जिसमें सभी की भागिदारी, हमारा मार्गदर्शन

1. गाय की लुप्त हो रही प्रजातियों की खोज और उनकी सुरक्षा एवं संवर्धन के कार्य।
2. वनस्पतियों की लुप्त हो रही प्रजातियों की खोज और उसकी कृषि व्यवस्था के कार्य।
3. गऊ के वेद-विज्ञान पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार, माध्यम - शोसल मीडिया।
4. प्रत्येक वर्ष प्रदेश और जिला स्तरीय पंचगव्य चिकित्सा सम्मेलन व मेला का नियोजन तथा उसका क्रियान्वयन।
5. विशुद्ध भारतीय नस्ल की गाय के गव्यों से निर्मित वस्तुओं का वाणिज्यिकरण।

।। गोमय वस्ती लक्ष्मी ।।

अपने गृह को सजाएं - सवारें गोमय से
यह घर को प्राणवायुक्त तो बनाता ही है - सूर्य के विकिरणों से भी रक्षा करता है।

गोमयः अर्थात् भारतीय नस्ल की गाय का गोबर, जिसमें धरती पर सबसे अधिक प्राणवायु (ऑक्सिजन) है, जो रूप परिवर्तन के साथ बढ़ता ही चला जाता है। इसका वाणिज्यिकरण कर दिया जाए तो भारत देश की गौशालाएं स्वावलम्बी हो सकती हैं। लाखों लोगों को रोजगार मिल सकता है।

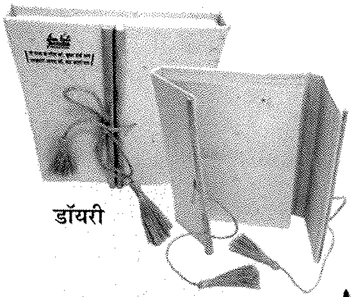

डॉयरी

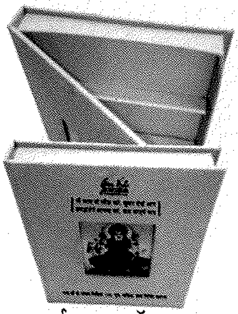

ड्राई फ्रूट्स बॉक्स

पेपर पैड स्टैंड

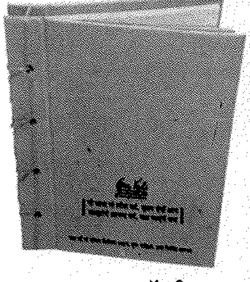

डॉयरी

पैन स्टेन्ड

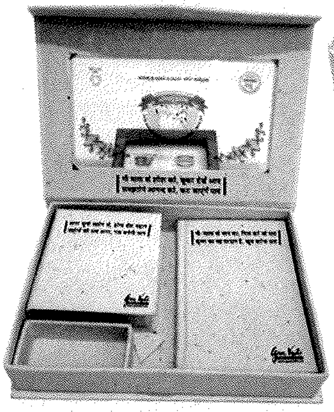

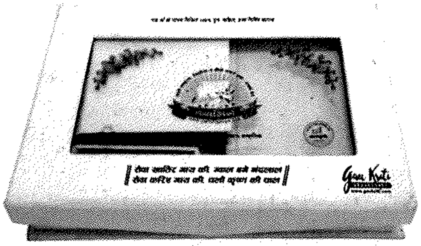

डेस्कटॉप जरुरत बॉक्स

विभिन्न आकार का झोला

12 वीं के बाद मैंने पहले गव्यसिद्ध किया, अब 'बैचलर ऑफ विजुअल आर्ट' कर रही हूं। साथ ही गाय के गोमय में किन-किन रूपों में लक्ष्मी हैं, इस पर शोध कर रही हूं।
प्रस्तुत है-एक रूप

गव्यसिद्ध
जाग्रति शर्मा

भारतीय गाय के गोमय से निर्मित

गऊक्रीति गोमय शोध संस्थान

पंचगव्य गुरुकुलम् की स्वतंत्र शोध ईकाई
जयपुर, राजस्थान
Web. : gaukriti.com • Mob. 9829055961
ऑनलाईन मंगवाने के लिए Web. : gavyahaat.org पर जाएं

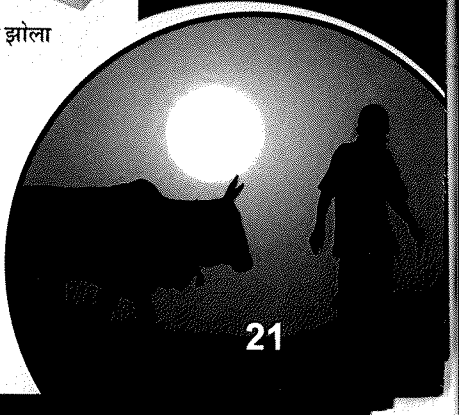

पंचगव्य चिकित्सा महासम्मेलन की झलकियां

पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने वाले शिष्यों, गव्यसिद्ध एवं गव्यसिद्ध डॉक्टरों के लिए, प्रकाशकीय मंच है 'गव्यसिद्ध'

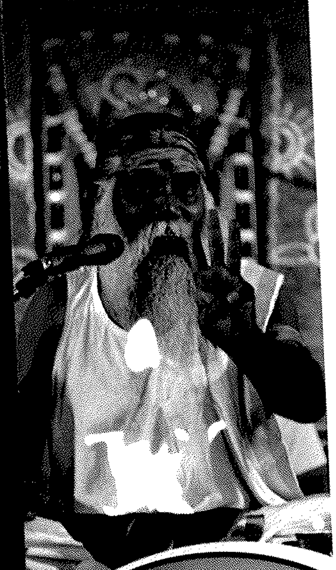

पंचगव्य गुरुकुलम्

भारतीय न्यास अधिनियम 1992 के अंतर्गत पंजीकृत

पंचगव्य विश्वविद्यालय निर्माण कार्य प्रारंभ

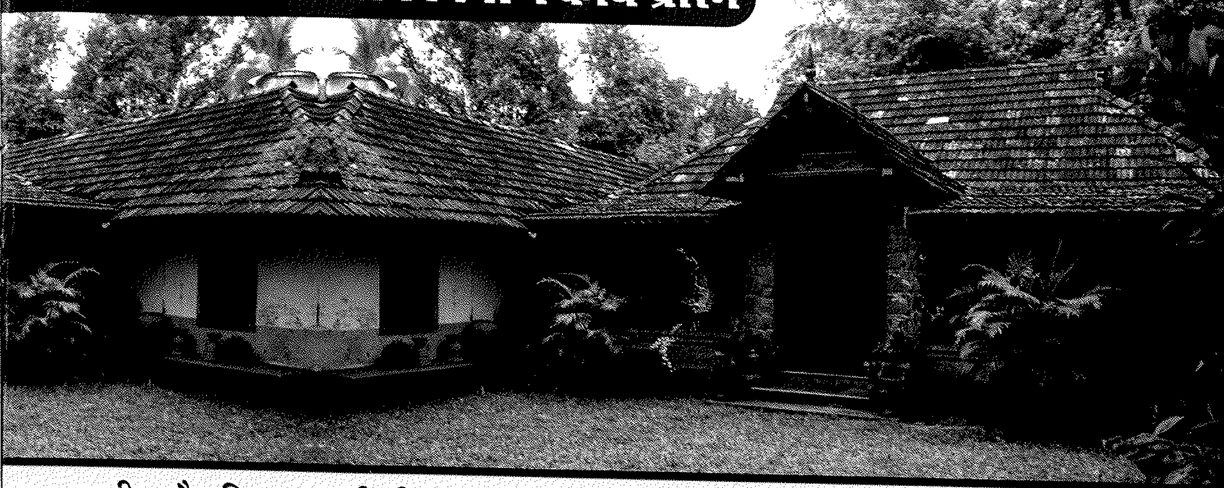

मेरे सपनों का गुरुकुलीय विश्वविद्यालय अब निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ।

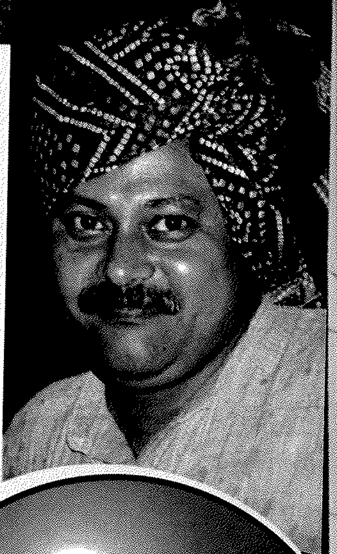

भारतीय पौराणिक तकनीकी ज्ञान को समर्पित गुरुकुलीय विश्वविद्यालय

इस संस्थान के निर्माण का कार्य प्रारंभ हो चुका है। 2020 तक बन कर तैयार होने की संभावना है। यहाँ पंचगव्य में विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) एवं शल्य चिकित्सा जैसे गंभीर विषयों पर शोध के कार्य होंगे। भारत की छोटी–छोटी ग्रामीण चिकित्सा को पुनर्जीवित कर उसे स्थापित करने का कार्य भी किया किया जायेगा। इसमें धुनी के भभूत से लेकर झाड़ – फूँक तक की वैज्ञानिकता पर कार्य होंगे और उसके सही स्वरूपों को पुनर्स्थापित किया जायेगा।

भारतीय संस्कृति, संस्कार व परंपराओं को गहराई से जानने के लिए यहाँ पर एक गुरुकुलम् का निर्माण कार्य भी चल रहा है, जहां 10-12 वर्ष के गव्यसिद्धों के बच्चों का नामांकन होगा और वे 10 वर्षों के पाठ्यक्रम को पूरा कर भारत राष्ट्र के निर्माता बनेंगे।

शिक्षा माध्यम

हिंदी, **தமிழ்** और **संस्कृतम्**

स्थान :

ग्राम - पोस्ट : पुत्तागरम, जिला : कांचीपुरम

तमिलनाडु - 621605

(चेन्नै, बेंगलुरु राज्य मार्ग से 3 कि.मी. दक्षिण, चेन्नै से 70 कि.मी. पश्चिम - दक्षिण)

अखण्ड भारत का संकल्प

विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न संस्कृति
पर गऊमाँ एक, उनकी संस्कृति एक, विविधताओं में एकता

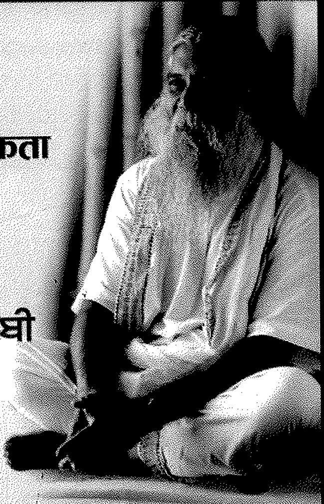

भाषाएँ

हिंदी के अलावा,

தமிழ், తెలుగు, മലയാളം, ಕನ್ನಡ, ଓଡ଼ିଆ, বাঙ্গালা, ગુજરાતી, एवं ਪੰਜਾਬੀ

भाषाओं में भी उपलब्ध है।

प्रदेश : 17 विस्तार केन्द्रम्
दीपावली 2017 तक

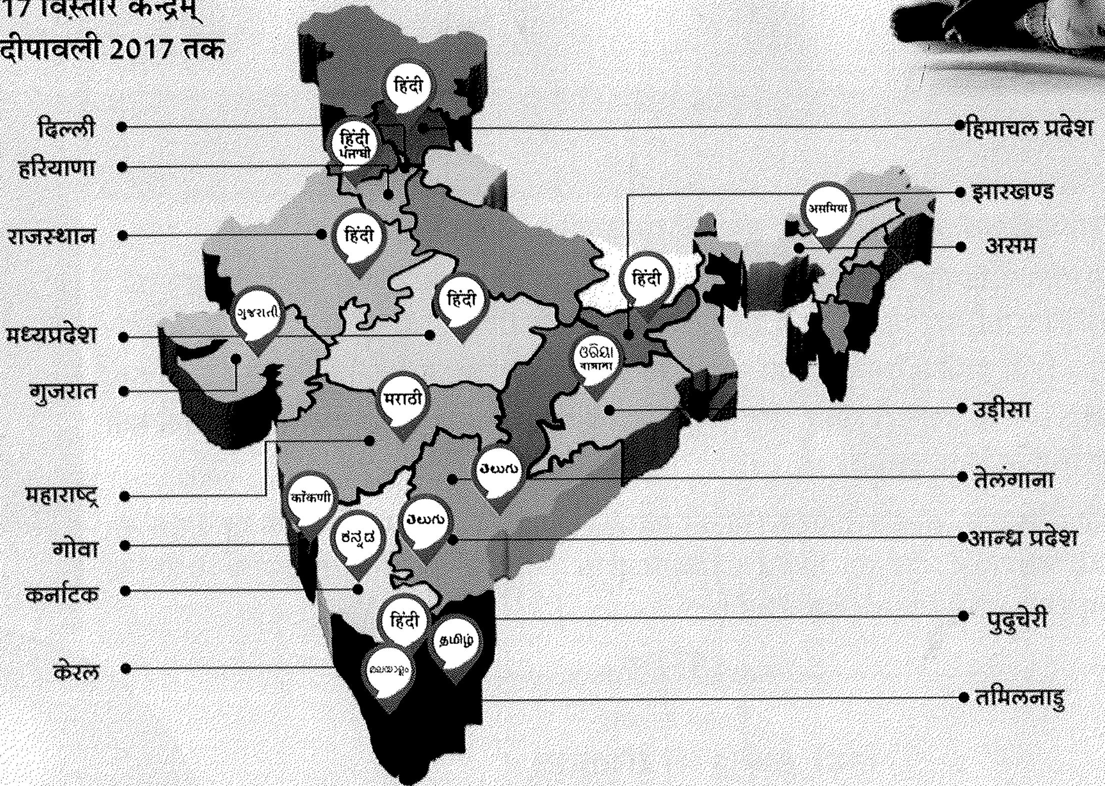

पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान विस्तार केन्द्रम्

मुद्रक : कलाकृति™ जयपुर 9829055961